

१०९

Shringar Shala.

॥ शृंगारशाला ॥

हस्ताक्षरितस्य च  
सामय -  
संवत् १८५५

सेवकवर प्रणीत  
शृंगारशाला

✓  
~~109~~  
109  
2148



**श्रीशिवो विजयते तस्य ॥ १ ॥** नंदे संदेहं नंदेहं नंदी करणभास्करं ॥ गत्वं दंसधिपानं पं श्रीमपिंद्रमणीं गुहं  
 ॥ १ ॥ १ ॥ रुचिहृतकनककुसुमानिहृतनिशुंभानिरस्तुंभासा ॥ १ ॥ कुचजितकुंजकुंभाकरमधुकुंभापुनातुकुंभासा  
 ॥ १ ॥ २ ॥ श्रीवीरमायाः रुचिरात्मजत्माचिजेदिनो ह्यो ह्यमणोः सुजन्मा ॥ १ ॥ सयैश्वर्यः सत्त्वविमोदशाहो भृंगो दशाहो  
 तनुते सुदेमां ॥ १ ॥ ३ ॥ रसाह्वयाहो मधुराविराहा शाहागुणानां विजितप्रयाहा ॥ १ ॥ रुतिर्मदीया सुकृतैरुशाहि  
 नीतनोतुमोपसु कृतैरुशाहितानां ॥ १ ॥ ४ ॥ १ ॥ अथातः भृंगो दशाहो निरूप्यते ॥ १ ॥ भृंगो रमं जुहोमसारमणिप्रच  
 क्षसकारनायकमणिः सुरतैरुमित्रं ॥ १ ॥ रत्याः पयोधरपुंगवकृतपनकुरेण भृंगारिणो मतनुता मतनुर्मुदं यः ॥ १ ॥ ५ ॥  
 जपति मकरकेतुः श्रीनिकेतैरुकेतुः परतरसुर्यहेतुः कांतिरत्नैरुसेतुः ॥ १ ॥ सुरीरुपुच्छे तुर्धने तुः परोऽन्यः  
 कद्वकुसुमवाणा यस्य पैतुर्न पीत्स्मन् ॥ १ ॥ ६ ॥ परनपननिपाते किंचिदकुंचितं सत्कृतित होहित होज्जो  
 जैत्रमस्त्रस्मरस्या ॥ १ ॥ तदनुपुनरपांगच्योतता रं नितानंतं जपति चक्रितं क्रीता होक्रितं होक्रसा रं ॥ १ ॥ ७ ॥  
 नक्रमहाक्रमहापत होचनेतयतुहा मयते मययैरिणः ॥ १ ॥ सुरपते रपिते रमणी मणी रविसरो जह  
 शस्तु हनानं रुयं ॥ १ ॥ ८ ॥ चुटन्मुक्ताहारं स्यहितकचभारं चकुचयोर्धुगे नारं सारं प्रियमुरसि संपी प्रस  
 रं ॥ १ ॥ मदाधुरीतारं चपततरसा रं गनपना दृष्टा होषं कृत्या मपयति चमोपं चतनुते ॥ १ ॥ ९ ॥ १ ॥

ईषास्मरमुखारविंदमधुरं नेत्यर्द्धजाग्रद्भाधुरीसंभिज्जं घृतकण्डकाहुतद्विक्रं वक्षोभितदक्षसा ॥  
गाछादिंगनमेतदक्तिपदिचेत्कामं कुरुंगीदृशः सौख्यं स्वर्गगतंतदा नुक्नुहये रत्यै फनीयः सरये ॥  
॥ १० ॥ औ सुं ते न च कुंचेन रुचिरा वाष्ठाघवक्षो रतौ विक्षिप्ता हक्रव द्दहरी परतनुभ्यं तात के  
को वरा ॥ ॥ रक्तो भोज मुखी सुखी ममदना प्रत्येद पिं पूज्यस्तारत्यं तेश यना श्रिता क्षिप्रिषयं  
भूयो पिलाया स्पति ॥ ११ ॥ गाछादिंगन तः सरोरुह दृशः श्रीमंडिता ल्त्री मरेण विक्षिप्ता हक्र  
व द्दहरी विगहिता मुक्ता वही रं यडिता ॥ ॥ स्त्र्या हे स्मर भूपशासन परस्पयं व संते न किंपूनो व  
क्षति पातिता सुमनसां व र्थे व संशो भते ॥ १२ ॥ अकारणाभिः कृतमंदहासं पिमुक्तकेशा व  
दिमंडिताननं ॥ ॥ मुदेमपाधूगीतिनेत्रभृंगं मुखारविंदं मदिरायता रूपाः ॥ १३ ॥ ललदक्षि  
रागिप्रमदे मदक्षिगंधुनोति चेतः क्रियतीति वार्ता ॥ ॥ नेत्रारविंदं तरसंगतं यत्करारवि  
पंन पुनोति चित्तं ॥ १४ ॥ पदप्रवाहेन पि होचनेन मुखे पुनाते स्वरुचा वतर्जिता ॥ ॥  
प्रवाह शाहा च कुरुंगवाहा सरो जमा हावन मापि वेश ॥ १५ ॥ प्राची वधूं रागवती करोषि



कृत्वा कृमिभेदादप्रकारम् ॥ ॥ अरं म सा र्वा शु नि ह त्तु मि धुः स मि ह न्तः किं त प न स्त ये  
 दा ॥ ॥ १६ ॥ ॥ वि मु च मं दार त रं मि हिं द त व ज्ज पा णे स्त र पु ग नो यं ॥ ॥ त त त्र गं तुं स म यो ऽधु  
 ना ऽऽ स्ते स्त रं कं दे ह स्य वि ना त्व प क्षं ॥ ॥ १७ ॥ ॥ के त की कुं ज म नि ष्य नि ष्य पा स्य सि पं च तं ॥ ॥  
 न प्रा प्य सि मि हिं द त्वं मा ह ती मु कु हो प मं ॥ ॥ १८ ॥ ॥ श पा मा स मे ति स म पा त्म क्म मा त्म गे हं हं च  
 कृ वा कृ द पि तां त्व ज च कृ वा की ॥ ॥ प्रा तः पु न स्त न म वि ष्य ति सं ग मो ऽस्या वि धा ग मे स ति य तः फ नु क्रा  
 यं सि धिः ॥ ॥ १९ ॥ ॥ श्री र क्षी र पृ थ्वी त न य राः संचारि पद्मा डिता पत्न्ये द्वा ह ने च मा न स स रो वा से  
 म नो तारि ष त् ॥ ॥ स्त्री पं दे रा म पा स्य चा न्य वि ष ये संचारि णो तारि ण स्त ते हं स पु रा रा ये न वि धि ना  
 का क्रेः स मं हा स्य ते ॥ ॥ २० ॥ ॥ कुं दे षु मं द मु प ग म्य म धू नि पी त्वा नी त्वा सु गं ध म म हं च कृ ता व  
 ती नां ॥ ॥ पी ता र विं द म क रं द मि हिं द यं चो नो ह ज्जो से मि मु क्ती र र सं वि चि न्य न् ॥ ॥ २१ ॥ ॥ पे ना र विं दे षु



[illegible]

नो सुखं ममा ग किं कृपा हे ए द पिते न द पा सि मु दं कृतः ॥ ग पा ॥ ग पा च रु तु से पं ॥ ग उ च मा न नु स म य ॥ ग म भा ज  
 हो न भा हो न रा ज से रा ज रु त्प के ॥ न त्प त्प मा स रो जा दी पि रं चि र चि ता इ प रा ॥ ग द ॥ ग तु जं ग कां तो उ व ने मु जं गे  
 पं प प स त त ॥ ग दू रं ग द न म स्तु त्प रु ती च सु रु ती त वा ॥ ७ ॥ ग वा च जे प मा न नु से पं ॥ ग त्प ह्यो च नं क रं ग सि रु  
 र गी प ति म न्म ते ॥ ए के र पिं प प ती ति प दं ति रु व पः पु नः ॥ ग ग ध र्म वा च रु तु प्रा ॥ ग उ द ह रं ग त रा हि य मा ॥ ग पित नु व र त नो  
 त्त नोः स मा ते सु त नु त नु स्त नु ते मु दं प पै वा रा शि स न व द ना द ना द रो क्ति र्म पि पित नो ति मु दं त पै व र्मि नो म द ॥ ध र्म नु से पं ॥ ग स्म  
 र रा ए नि शि ते क्ष णं त पा ते नि र्गु त मि दं म म मा न सं त्प पै वा ॥ ग ल म त र स ति त स्मि त स्य पा तैः कि मि ति न जी व प सि त्प मे त्प त न्मे ॥ ८ ॥  
 वा च रु तु से पं ॥ ग रु तं त तां ता त नु र घ कां ते व्यु ता ह कां ता ॥ व्यु त कां त सं गे ॥ ग दी तां वा नी प प ती सु मं ती व्य न क्ति भो गं उ रु  
 धा पितं ते ॥ ९ ॥ ग ध र्म वा च रु तु से पं ॥ ग प दी प सी है त घ दी पि ना रो रु दी य दी पा ज रु दी रु ति ॥ ग रु न्पा नु का पं न स मा  
 धा रा पाः स मा घ त वा म स मा न त स्याः ॥ ग रा ॥ ग ध र्म वा ॥ ग त पो प मा पा न नु भा पि ता पा म भा उ मे वा नु भ वा मि त स्या  
 ॥ ग र मा स मा चे दि ति न स्थि रा पाः स मा न ता मे ति च हा रु पं जी रा ॥ १० ॥ ग प पा वा ॥ ग न स न ता स म ता ह फ ह स नी च  
 र णा पो र न को र पि रो म ते ॥ ग रु सु म नः सु म न रु त पा त पा सु पि ता द पि ता सु स मा स मा ॥ ११ ॥ ग त्रि ध र्म प उ च मा  
 न नु से पं ॥ ग रु रं ग नी ला प त हो न हो च ना नु रं ग शी ला पि त भा व गुं ह नो ॥ ग मु त्पा र पिं दे द च ती स जी स ती स



तीव्रशोतात्पतिविहोक्तोपमानपागा **प** नानुज्जीविनी कायाचक्रोपमाननुतेषां गरमासमाक्रापिसमान  
 नापाः समाननापातिसमानतापागागशिरीषपुष्पाधिकोमहेनपदामहेनैतु कथं नि कुं जं **॥ १५ ॥** माये  
 चर्मोपमाननुता **॥ १६ ॥** तुंगोस्तनौतेयसुधारमापाः सुधाधरास्तेयसुधाधरीपतता **॥ १७ ॥** सुधाधरीपत्पम  
 हं मुत्तं च स्वादेधरीतिपिसुधाधरीपतिपागा **॥ १८ ॥** पथाका **॥ १९ ॥** तुजंगमीपंति कयाह्याले कुचदपीता  
 हं फलीपतीपं **॥ २० ॥** सुधाधरीपत्पचरोऽतिमिष्ट श्रियं ह्येति हो की पसितत्यप्रेतिः **॥ २१ ॥** गारुड **॥ २२ ॥** पथाका **॥ २३ ॥**  
 राचीपंतामागेपसुतनुतनुक्रांत्याचसुमनोचक्रपंता **॥ २४ ॥** कृतं पशराधरी पत्पतिहया **॥ २५ ॥** पिशा हत्येनेच  
 द्वितयमरविंदीपतिकुचदपीपं चत्तत्येकनक्रुहरीपत्पति **॥ २६ ॥** गारुड **॥ २७ ॥** विष्णुपिउपमेपपाचक्र  
 लुता **॥ २८ ॥** तुजंगक्रांत्याकुपिताहक्रांत्या कुरंगक्रांत्या नपनातिक्रांत्या **॥ २९ ॥** मनोमदीपं हृदपंगमासागमागेमे  
 रेवपशीचकारा **॥ ३० ॥** चर्मोपमानकाचक्रनुतेषां **॥ ३१ ॥** इत्थुपमानिस्तुपथाकयामतिरुत्तं **॥ ३२ ॥**  
 उपमाकायामतिरुत्तपथामिदं कृतं **॥ ३३ ॥** शोचनं सुधियः सर्वकुर्वतुं दयाः सदा **॥ ३४ ॥** गीतुस्यसंशर  
 तां **॥ ३५ ॥** क्रान्तास्यक्रांत्या जितक्रामक्रांत्या क्रान्तात्यमेकालमिवाति क्रान्ता **॥ ३६ ॥** कामेषु क्रान्तास्तपलोचनान्ता  
 स्ते ह्योचनान्ता इत्यतन्त्रि क्रान्ताः **॥ ३७ ॥**

स

**पिंडु** सं दोहपानं विहितं वसंते **॥ ३८ ॥** हाहंते नैवमिति दफ्ताकरीर पुष्पविहिता स्वयंतिः **॥ ३९ ॥** हीनेप  
 जोशिशिरसमयेनेनतेचरीक्राः पथाका **॥ ४० ॥** ध्ययितमनसस्तो धितायत्परं देः **॥ ४१ ॥** कुं देनेमाः कुसुमनियपाः  
 संतिजित्तका रातस्या **॥ ४२ ॥** जहितहाहितापुष्पिता कीर्तिरास्ता **॥ ४३ ॥** धयारसनपानपानपविधा  
 नपाहानपामराहतनपाधराचतरसज्ञपापिज्ञपा **॥ ४४ ॥** पपाजहतिपा कृतापिमहामैत्तिकानां धिपातपा  
 पिततपादपापीतपापसी कांक्षीस **॥ ४५ ॥** हाहक्रांत्या जितक्रांत्या जसुतजा हंचयितापिरा हा **॥ ४६ ॥** रसा हरा  
 लजमदैक्राहारा जगानंचफ्रनंतयै **॥ ४७ ॥** रसेनपाचक्रु सुमेनपाध्वं दलेनसंपाधनकासनेच **॥ ४८ ॥** समाग  
 तापाजितपयेऽलपेऽजक्रीतानधाकीर्तिरिपेत्तयै **॥ ४९ ॥** पंचाननेपंचराज पंचप्रपंचपन्नंयतिपंचतांच  
 त्रगापंचीरुतजो जलपंचमस्तेपंचाननेपोषविधिं वेदक **॥ ५० ॥** क्रुद्धा हयभ्येतसिचेनमेतत्तत्तद्वालयः **॥ ५१ ॥** क्रिं स  
 रुक्तामनुष्माः **॥ ५२ ॥** दपा हयस्ते सुपितः त्यदासे दपा हयः शर्वपतः स्वतंत्राः **॥ ५३ ॥** गुणवता सह संगतिरुत्तमा  
 जनपतिप्रमदंगुहतां नृणां **॥ ५४ ॥** कुसुमपामसुतंग तितः स्फुरं शिरसि स्रजमुपैति महात्मना **॥ ५५ ॥** नजेतुमीरो  
 पुरयमेषपं प्रो नतं पिनं सोपमस्तमा **॥ ५६ ॥** कोका हयौत्पा ज्ञापितं विजेतं राकोऽज्ञमजं जपति कथं **॥ ५७ ॥**  
**॥ ५८ ॥** गापापहाजाहंती श्वरस्पती जलहेतुं स हस्तम हं स्य **॥ ५९ ॥** प्रभुर्ददित्वा मरुमा शुद्धं जिह्वा सुकृती



विराजते ॥ ॥ योऽप्यपञ्चाक्षरस्य पञ्च हस्तस्य ते प्रभो ॥ ॥ ३॥ ॥ अनुभवाभिद रूपकमिदं ॥ ॥ एवं जनादं जनात्ते  
 रम्यं मयेऽक्षिरं जने ॥ ॥ जं जने कुतमापूना तत्कम देण सुंदरि ॥ ॥ ४॥ ॥ अधिकताद्रूप रूपकमिदं ॥ ॥ अदक्ष संभवा  
 क्षासती पमपरासती ॥ ॥ सती कुलैकाभरां कुलं भवपतिस्वर्गं ॥ ॥ ५॥ ॥ नूनताद्रूप रूपकमिदं ॥ ॥ तन्नेत्रवने संदृष्टि  
 पञ्चन कुरोदरि ॥ ॥ अघरं वृत्तये ते सुधा रूपोऽस्तु तत्सुधा ॥ ॥ ६॥ ॥ अनुभवताद्रूप रूपकमिदं ॥ ॥ उदाहरणं  
 त रागा यथा क्रमतः ॥ ॥ सरोजं तापतलोचनां तामनोजं तात्वमतीव कांता ॥ ॥ रतां तां तामनो ज्वलांता क्रमातिरा  
 तामुदमादधासि ॥ ॥ ७॥ ॥ इयं स्वतंत्री कृतपंचयारा मंची भवन्मं जुगारं निपंची ॥ ॥ विनेयतं वीरसना विपंची पंची कृतं पं  
 चममातनोति ॥ ॥ ८॥ ॥ सरोजपत्रापत ह्येत्यनां तो मनोज एवापममंग मंगं ॥ ॥ विधापया हावत रीतिभंगं निधाप संगं तनु  
 ते स्वरंगं ॥ ॥ ९॥ ॥ मनोहरा पंच सुधा रमा पंच सुधा घरा पंच निरीक्षिता पंच ॥ ॥ निरीक्षितेऽस्याश्च मुखारविंदे किं वाऽरविंदे  
 न सुधा घटपया ॥ ॥ १०॥ ॥ अदक्षजा दक्षसुता परे पंसती लती रीतिरतानतांगी ॥ ॥ तदंष्ट्रिपञ्चो गुलियं द्रविणं देष्टु पजेन  
 क्रिमिं दुनाकिं ॥ ॥ ११॥ ॥ अघरविं च मिदं तव रं डितं वददं डितमेवरतं पुनः ॥ ॥ सुतनु विं च मयं डित मप्यहो निजस्वा सवि  
 रं डिततीति किं ॥ ॥ १२॥ ॥ निजहृत्वा कुरुते सवि रं डितः इति शपाठः ॥ ॥ यथा ॥ ॥ खंडी करोति लवि विं च मयं ॥ ॥ तदंतेन  
 रं डित मयेऽघरविं च मेतत् ॥ ॥ जायेदपत्यपिरतां न नितं ततां ते कांते त्वरं डित रतानि जतानि कुं जे ॥ ॥ १३॥ ॥ इति रूपकं ॥

॥ ५॥

राधा लता हिंगित मं जुमर्तिः श्रुति प्रजाराधित चारु रूपः ॥ ॥ कृतिंद कन्या तट संगतो पंच पुना तु मां रफाम तमा लशा लः ॥ ॥ १४॥ ॥  
 इति परिणामः ॥ ॥ तनु लिषा हिर्मधुर्मा च जीति हंसीति गत्या कृतं हंस एषः ॥ ॥ निरीक्ष्य नेत्रे भवती कुलं गी त्वपं सुतंगो  
 मनुते मनस्तः ॥ ॥ १५॥ ॥ रूपे रतिः सा सुतनुः सती प्रते सती विपंची वचन प्रपंचे ॥ ॥ तिजेत मा केजि कला सुचेतो हरा  
 नचेतो मम संजताति ॥ ॥ १६॥ ॥ इत्यु ह्येव ॥ ॥ हचि प्रशस्ता मरविंद हस्ता मा लो क कस्ता महि मां शुजा पाः ॥  
 ने निःसरंती स्मरति स्मरार्तः सिंधोः प्रयातो सरमा रमांतां ॥ ॥ १७॥ ॥ इति स्मृतिः ॥ ॥ मरकत मणि गेहस्पो र्ध्वं दे शो च  
 हंती मितं तण्डिते दुःश्री समाना स्य रोभां ॥ ॥ कुपल पद जने चां पीक्ष्य चेतो न कस्य भ्रमति जह दं दे पि पु देषेति  
 पूनः ॥ ॥ १८॥ ॥ इति भ्रंति मान् ॥ ॥ क हा हि मां शो रम हा कि मेष्वाऽव ला रती शस्य हि वा कृजा ता ॥ ॥ च्युतो  
 रसः किं नुरा पते वीर मेति नो निर्णय मेति चेतः ॥ ॥ १९॥ ॥ इति स सं देहः ॥ ॥ क हा नि धौ नैव कलं ह्ये रपा  
 क हा नि धौ स्य कलानि चेत्ता ॥ ॥ पराजित स्या स्य सरोज नेत्रे देवेऽप शः शपाम हि मा विभाति ॥ ॥ २०॥ ॥  
 तना स्य कां त्या निजिते सुधा चरे सुधा चरेऽपं जति भा ति नी जि मा ॥ ॥ राशः कुरंगो ति ज रात्म ना मि ति म  
 मो पितं तत्र न सं स्थिति स्तयोः ॥ ॥ २१॥ ॥ नेयं कां ची मे जु मुक्ता नु पंचा चेतो पंचा मि च किं तर्हि कां ची ॥ ॥  
 कां ता कां ची ता दृशि स जुणा ता ने चानं दे जी क्षिता सं वि यजे ॥ ॥ २२॥ ॥ मनो हरो पं तु मनो भिरामो मनो मु



[illegible][illegible]



सुधाधरेतन्नि सुधाधरेतांनुधामुधाऽमी भ्रमते न दंति ॥ १० ॥ इदं सरोजद्वितयं मनोजरती वृष्टुर्गमनसरः सरो  
 जं ॥ १० ॥ ॥ **भेदकातिशयोक्तिर्यथा ॥** ॥ अन्वेषेय शोभा घतवाननस्याऽधरेऽन्वेषेया घनरोह रूपं ॥ ॥  
 अन्वेषेयसंभासि विभासितांगी हास्यंत वाऽन्यत्किमुकारणं तत् ॥ ११ ॥ ॥ **संबंधातिशयोक्तिर्यथा ॥** ॥  
 जितो मुखेन स्य रुचा कलं क्रीकृतोऽस्तमेष्पत्यचिरेण चंद्रः ॥ ॥ इति प्रमोदं हृदये दधाना चंद्रोदये नृत्यति च  
 क्रवाकी ॥ १२ ॥ ॥ **अहंबंधातिशयोक्तिर्यथा ॥** ॥ जितमनोजसरोजं विहोयना तनुरमेपरमे पुरत  
 स्तथा ॥ ॥ नक्रमता कनहा यत ह्योयने मनमुदे समुदेति मनागपि ॥ १३ ॥ ॥ **अक्रमातिशयोक्तिर्यथा ॥** ॥  
 सारसा यतदृशो दृशोऽपथा शैशवस्य वयसो विनिर्गमः ॥ ॥ सत्कदाश्च परिपोक्षरागमः पश्य चित्रमभाजत  
 रंसनं ॥ १४ ॥ ॥ **चपलातिशयोक्तिर्यथा ॥** ॥ प्रपातिरुद्धो मधुरामितीरिते पयस्य पाकापितथा कृशा  
 ऽभूत् ॥ ॥ पथांतिकस्थामपितामदृष्ट्वा पराजयं विस्मयमापचिंतो ॥ १५ ॥ ॥ **अत्यंततिशयोक्तिर्यथा ॥** ॥  
 ज्ञेयायतस्नेहतापुराऽस्योजगाम चक्षुः कृपास्तवात्मे ॥ निरीक्षणं नंदसुतस्य सेकोरसेन पश्चादभवत्तत् ॥ १६ ॥ ॥ **इत्यतिशयोक्तिः ॥ तुल्ययोगिता पथमा ॥** ॥ नते मसि प्रेयसि भुञ्जमानमितीरिते जेपसि पं  
 जाक्ष्याः ॥ ॥ चचा हजामपि चोह धारा विशा हने चान्नन सस्य मानः ॥ १७ ॥ ॥ तारकारतिवितारकारकः

स्तारमारचितकृतिमाहितः ॥ नारसारसमसारवत्तफादरसादवदनापमानतां ॥ १८ ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ यः साधु  
 मुंचति न मुंचति वाऽस्य संगं प्रस्तोति यै न मतिनिंदति यः कृपाया ॥ ॥ यो हंति हंत हतधी दहितः सधीरः सर्वश्रुतेषु सनधीः समदृ  
 ष्टिरेव ॥ १९ ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ विशा हजामापरिपीतहाजा भृंगारशाज्जा दितेव भाति ॥ ॥ स्वरादुशोभाजितपन्नशो  
 भायाजापिचाजापगुणाजकाहा ॥ २० ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ मदितामदितापतेक्षणपि सणमात्रेण मुखारविंदजगता ॥  
 मधुरामधुराजभानिभाजं रसिकं नो मदप्रत्यवश्यमेव ॥ २१ ॥ ॥ **इति तुल्ययोगिता ॥ अथ दीपकं ॥** ॥  
 पथाया ॥ ॥ नक्षत्रहारकलितं कुजकामिनी रंसघामिनी मुखमिदं विदधाति रागं ॥ ॥ सौदामिनी सनविभागजगामिनी वंगो  
 दी ॥ ॥ जानंदपतिराहो यमानंदपतिराशशी ॥ २३ ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ हटति हसितमेतत्तत्त्वितेशु भ्रंशोत्पाहुरति  
 च मुखशोभाशीतरस्मिन् प्रभांते ॥ ॥ प्रहरति तव नेत्रं जातदृष्टं स्मरोनां प्रहरति पलमेकं त्वां विना मे मृगाक्षि ॥ २४ ॥ ॥  
 पथाया ॥ ॥ अपमुदप्रमुपेति यामिनी शो रवि रपते च रमा च तस्य चूडं ॥ ॥ इति हिंदिकुमुदं मुदं विभर्ति कृण दलि  
 महिनां स्तिप्रियं मुंचमानति नितं च मानिनि ॥ २५ ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ चारुसीतिसितरस्मिन् मं हं चारुसीति कुमुदमुददयत ॥ ॥ मुंचमान  
 जेदिनोपि ॥ ॥ सुधाधरो सा यधो धराप्राप्तिपेतजं दधसुधाधरः खे ॥ २६ ॥ ॥ **अथ प्रतिपत्तमा ॥** ॥



८७  
यात्र

॥ १ ॥ **अनुक्ता** **वस्तु** **प्राप्य** **यथा** ॥ ॥ **संघान्** **तप** **पि** **धा** **पि** **धान** **त** **म** **पेश** **प्यो** **त्थित** **स्ये** **शितुः** **पा** **द** **दं** **द** **सु** **खा** **प** **नु** **श** **र** **प्रा** **के** **ड** **ना** **स्यैः** **करैः** ॥ ॥ **आ** **का** **शं** **ग** **रा** **भू** **त** **जा** **व** **धि** **क्रि** **जा** **स्ती** **र्णो** **दु** **पु** **ष्पो** **ज्य** **ह्ना** **ज्यो** **त्स्ना** **रं** **ज** **व** **ती** **प** **दि** **सु** **ख** **मि** **दं** **चा** **त्ती** **प** **गा** **उ** **त** **मः** ॥ ॥ ३ ॥ **ह** **तू** **त्प्रे** **सा** **यथा** ॥ ॥ **स** **दो** **पि** **त** **च** **द** **ना** **म** **तां** **शो** **र** **जा** **प्य** **भं** **गं** **हृ** **दि** **ज** **ज्ज** **पे** **न** ॥ ॥ **ग** **ह** **ी** **त** **म** **तुं** **रा** **श** **त्वां** **छो** **न** **क** **त्वं** **क** **मे** **तं** **ग** **र** **त्वं** **ज** **ती** **मः** ॥ ॥ ४ ॥ **यथा** **या** ॥ ॥ **स्व** **कां** **ति** **रं** **दी** **कृत** **रं** **ज** **न** **स्य** **भ** **या** **दि** **ज** **त्वं** **न** **प** **न** **द** **प** **स्य** ॥ ॥ **कु** **रं** **ग** **जा** **ला** **सि** **त** **रं** **ग** **शा** **ला** **स** **रो** **ज** **मा** **हा** **व** **न** **मा** **पि** **पेश** ॥ ॥ ५ ॥ **यथा** **या** ॥ ॥ **सं** **ना** **मं** **घ** **णु** **के** **न** **क** **र्तुं** **मि** **य** **ते** **मं** **यं** **तु** **जां** **ग** **कृ** **ता** **किं** **य** **द्वा** **ति** **सु** **म** **ध्य** **मे** **परि** **क** **रं** **ग** **प्रा** **स** **रो** **ज** **ान** **ने** ॥ ॥ **जा** **त्ये** **वे** **ति** **तु** **जा** **मि** **ला** **वि** **सु** **मनः** **रो** **लो** **ध** **सा** **नु** **द** **पी** **शि** **धा** **र्षे** **पु** **न** **के** **बु** **भिः** **स** **ह** **कु** **यो** **ध** **तो** **नु** **किं** **रं** **चु** **रं** ॥ ॥ ६ ॥ **कां** **ते** **त** **पो** **तुं** **ग** **प** **यो** **ध** **रा** **भ्यां** **सा** **पु** **ज्ज** **मा** **तुं** **पु** **पि** **कुं** **म** **वं** **दं** ॥ ॥ **किं** **कु** **त** **कार** **स्य** **कृ** **ता** **रा** **जं** **ग** **पा** **कं** **ग** **का** **र** **ति** **त** **प** **स्त** **नो** **ति** ॥ ॥ ७ ॥ **इति** **५** **त्प्रे** **सा** ॥ ॥ **अ** **प्रा** **ति** **श** **यो** **क्ति** **नि** **रूप्य** **ते** ॥ ॥ **प** **ज** **द्व** **पे** **ग** **ज** **करो** **क** **र** **म** **र्षि** **रु** **न्पं** **रु** **न्पे** **सु** **वर्ण** **क** **ल** **शौ** **च** **त** **तो** **जु** **म** **जो** ॥ ॥ **आ** **ज** **स्त** **तो** **ज** **पु** **ग** **तं** **च** **त** **तो** **ध** **का** **रः** **सर्वे** **प्य** **मी** **क** **न** **क** **नी** **ह** **धि** **चि** **न** **मे** **त** **र** ॥ ॥ ८ ॥ **अ** **मे** **दा** **ति** **श** **यो** **क्ति** **र्ष** **था** ॥ ॥ **ता** **दू** **प्या** **ति** **श** **यो** **क्ति** **स्य** ॥ ॥ **आ** **धि** **म** **न्** **न** **ता** **त्प्रा** **नु** **भ** **यो** **त्प्रा** **व** **त** **द्दे** **दा** **रूप** **क** **स्ये** **व** **हे** **पाः** **गं** **य** **गौ** **र** **ज** **भ** **पा** **दे** **क** **मे** **व** **ज** **स्ये** **व** **दा** **मि** ॥ ॥ **यथा** ॥ ॥ **सु** **वर्ण** **नी** **तु** **ल्या** **नु** **प** **ज** **परि** **स** **र्प** **त** **नु** **ह** **चं** **ह** **न** **त्कारै** **र्ने** **त्रे** **स्य** **ग** **प** **ति** **नि** **जा** **लो** **क** **न** **जु** **षां** ॥ ॥ **पु** **र** **स्ता** **त्प्रा** **दा** **परि** **क** **ल** **प** **मि** **त्रा** **दु** **त** **म** **हो** **अ** **न** **भ्ये** **ना** **का** **रा** **स्थि** **ति** **मु** **प** **ग** **ता** **का** **त** **दि** **दि** **वे** ॥ ॥ ९ ॥ **अ** **मे** **दा** **ति** **श** **यो** **क्तिः**



पा हित नाहितं तं मेहशरं शंकरमादिदेवं ॥ ॥ स्मरो वशी कर्तुमपं प्रयत्नः प्रसूनकारोपितनुर्वक्ष्य ॥ ॥ ४॥ ॥  
 ॥ ॥ **परिकृतं कुरु पथा ॥** ॥ जलामतिस्तु कान्त न्यौ मदनकांतो तिलोत्तमो ॥ ॥ वामो कोनु पशी कर्तु  
 शक्तः स्यात्तशक्तिमानपि ॥ ॥ ५ ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ विशारदाशा रदचंद्रवज्रेन शारदा ते समता मु  
 पोति ॥ ॥ सुधा तु हा मेति न्याय रस्य युधा वंदतीति मुधान चैतत् ॥ ॥ ६ ॥ ॥ **अथ श्लेषः ॥** ॥  
 प्रशो दया व कृतिता गोपा हो गोप वंदितः ॥ ॥ श्रीमान् रपिनाय कोपेतः कामदो मोक्ष योऽवतु ॥ ॥ ७ ॥ ॥  
 श्लेषवित्तो मत्कृत श्री कंठा नरो होयः जैष गौरव भवा नान्न मपा हिरिते ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ सदा रामे  
 एा तदशः सुमनो गण शाहिना ॥ ॥ हा क्षमण नुगतेन त्वं द्विजसंमदकारिणा ॥ ॥ ८ ॥ ॥ **महिम्न**  
 तो सौचमहो दद्यान्वितं कृता निमज्जैः कुमुदं पिकाशपना ॥ ॥ मगादिचित्रां परधारिहारिषामां मुखं च  
 वेति चारु राजा ॥ ॥ ९ ॥ ॥ **अथ स्तुतं प्रशंसा पथा ॥** ॥ सुंदरं सुरासि सो शंभो यं यं मम हृत्तरं ॥ ॥  
 स लेचं दनं तं त्या ज्यो मुजं गम कुसंगमः ॥ ॥ १० ॥ ॥ **अथ स्तुतं प्रशंसा मेदा** ~~मम हृत्तरं~~  
~~मम हृत्तरं~~ मम हृत्तरं श्री कंठा नरो होयः दृष्टव्याः ॥ ॥ पदा मिहिते उरतो रतो राने वयस्य च सुपु  
 त्रि दुपात्री ॥ ॥ स सा रसा र निगमे कृता नारा धितारा तरुणी हरस्प ॥ ॥ ११ ॥ ॥

॥ ५ ॥

कृताशतं वर्षति मेधना हा द्विषंति भेकाः शिरिषो न दंति ॥ ॥ ज्वलंति चारा ज्ञानं हंति पाताग हंति यं  
 गानि क्रिमा जपामि ॥ ॥ १२ ॥ ॥ **दत्तापति मां पुवंती च हत्वा विभोगः त्वमम स हरेधिः ॥** ॥ **श्लेषः**  
 पू ज्यो मुने स ए व परा त्परः कोपि महा न्यन स्वी ॥ ॥ १३ ॥ ॥ **यः कामदो मृति वि श्लेषित श्वरात्तया पु**  
 तो मम कृता वगाही ॥ ॥ **अहीनहारी पुरुषो त्तमो यो गंगां विभर्तीति स एव मुत्स्यः ॥** ॥ १४ ॥ ॥  
**अथ पथी पोत्तं ॥** ॥ कुचद्वयीते जघनं निरीक्ष्य स्तौति निवा सस्य मुले गजस्य ॥ ॥ मदेन कुंभस्पर्क  
 रस्य पाहे त्वत्तश्चिरं रूढिमुपागतोपि ॥ ॥ १५ ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ कृम हा नयना यया म्पहं सर  
 सी कामिनि काम सन्निधौ ॥ ॥ स्थिति मेहि सुसंगमेन वा हे हवही कुंज गहं तरे सुरेन ॥ ॥ १६ ॥ ॥  
**अथ पथा जलुति र्वथा ॥** ॥ हित्वा गजं दिक मश्व ज्ञाते स्वर्गादिभूषां च विहाय गंग ॥ ॥ **अहीनरपि च**  
 नुं वषमेन गंगु मोक्तुं विषं कृत्स्नपि देवि मज्जेत् ॥ ॥ १७ ॥ ॥ **पथाया ॥** ॥ तीक्ष्णैर्न त्वैरीष हरे रदनै रतीव  
 कृतापि दूति कुचयो श्वरुपो हपोथ्य ॥ ॥ रिपन्नासिना स्ति महिना व मुत्पद्यति स्ति धन्या सिता हसमहो ज  
 थयामि श्रितं ॥ ॥ १८ ॥ ॥ **अथ निदा पथा ॥** ॥ स निर्वापिता तापि पातापि देतो नु निघः शि  
 यो पापि संतापितारिः ॥ ॥ नयेनो दरागेना शशि न्याचित स्त्वं निपीतो गसि नक्ष्ये उपधेन पापिन ॥ ॥ १९ ॥ ॥

॥ ६ ॥



**जाते पोपथा ॥** ॥ प्रपिष्यसि संदेशं मेति रुचिता विपि विस्मृत वसीति ॥ ॥ क्रोधात पात्र दोषो भुरतिप  
 रं रत्न्य हृदयासि ॥ ॥ २० ॥ **यथा जा ॥** ॥ शंभो स्वामिन् पुनरे क्रुदिगिर हृमिदं कंठो रोनिधातु  
 भा होग्निनागमगे ऊर्जत रम पुंशक्ति ए स्तपि मो स्त ॥ ॥ वारे प्य स्वान्न सं स्था पवि ॥ गति  
 विभु ~~दोषो~~ **सुतासा नेतैः किंवा न चोति** न किमपि भगवन् अरुते चेश्वरो सि ॥ ॥ २१ ॥  
**यथा जा ॥** ॥ ॥ का सुधानिधि स मे व दनं स्वकीयं तं मुद्रपजिपत मे ध्रुव गुंठनेन ॥ ॥ यत्तत्पयान रसि  
 का प हवः पुरेऽस्मिन्नेते च कोरत हरा इव सं चरंति ॥ ॥ २२ ॥ **यथा जा** क्षति रिपं तीसका श्वरं तु पा  
 नं पपेष्मसिता यत चाह नेत्रे ॥ ॥ पीते च कोर नि करै रमृते सुधां शोर घापि हो कपिपितो ध्रुव तां  
 शुरेव ॥ ॥ २३ ॥ **॥ ३० ॥** **यथा पि रोधाभासः ॥** ॥ अगो पतिर्गो पमवत्सुतक्तः स गो पति  
 जी पत एव शंभो ॥ ॥ त्यदर्थना देव भवंति लोको निमेष पंतो प्यनिमेष पंतः ॥ ॥ २४ ॥ **यिरो ध्रुव**  
 पशामेता मातृकत श्री कं गमरो जा ताः ॥ ॥ **यिरो योक्ति र्थथा ॥** ॥ यथा मय रा पापिता न पचरे द्र  
 यदा धिके सति त्वपि सती पतौ सुकृत्वा तत्र रित्रांतरि ॥ ॥ त्यदं धि त हा संगिनि द्विज परे निरा  
 संगिनि सुधा ति हरा दूतं न फल मेति चित्रं म हत ॥ ॥ २५ ॥ **यथा जा ॥** ॥ त्यदीन पंच  
 रिमि तु अथितं प्यपि प्यो पीनो ह मे ष इदमप्यप्यमो असि दं ॥ ॥ नापो मयान्मम पि कोस्तप किं करो

॥ १० ॥

ता

चरत्वं सुखमास्वत्वं वि होयना हृदयं मु खं दौ ॥ ॥ शरति शास्त्रा मिति तु ज्येमेव क जानि यौ क्रामि  
 नि का हि मा धि क्रुः ॥ ॥ ३७ ॥ **यथा यत्त होक्ति ॥** ॥ यथा ॥ ॥ जा रें द स्प स ह वा रिण ३ ग त ह  
 रि जा रें द शो दृशो दु गत ॥ ॥ यच हं च प ह वा स न ह दि प्राण वा पु र भ व स पु नः पु नः ॥ ३८ ॥  
**यथा जा ॥** ॥ किं चिदि हो हान रमान न मुद्रन स्य प्य सा पी कृते क्षरा प रं पुरवा नि री क्ष्यो ॥ ॥ इ  
 द्वा ह मे वि वि रिति किं च दु दी र्घ पू नो सा र्धं मनो भिर एव गुंठ न मा च रु धी ॥ ३९ ॥ **यथा यिने**  
**क्तिः ॥** ॥ द्विधा ॥ ॥ पथो ॥ ॥ का हां वि ना भा ति न मे ह रा हां वि ना भा  
~~यथा जा~~ **यथा जा ॥** ॥ ना भा ति पा जो वि वि ना न पथा वि धां च वि धा वि न य वि ना यो ॥ ॥  
**यथा जा ॥** ॥ यि ना वि का रं सु मनो मनो रमां त नो ति त न्नी प हितं वि ना र वि ॥ ॥ यि भा ति  
 दो षे ण वि ना क्रु पेः कृतिः क्रु पि श्व रो षे ण वि ना क्रु पि प्र भः ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ **यति श्री गंगा रता हा पां चतु**  
**र्था भंगिः समाप्ति म ग म र ॥** ॥ ॥ **यथा यत्त होक्ति र्थथा ॥** ॥ पी त्या म रं द मो दारं सु मनः पुं  
 पू जितः ॥ ॥ गच्छन् पुष्प वती मेतां मधुपत्य न ह ज्ञा सि ॥ ॥ ४२ ॥ **यथा जा ॥** ॥ रमा ना स मे ति त म पा  
 त मे क मा त्म ~~गो हं~~ ते च क्रु पा रु द पि तां त्य ज च क्रु वा की ॥ ॥ प्रातः पुनस्तप न पि ष्य ति सं ग मो ऽ स्या वि  
 भा ग मे सा ति पु तः क नु का पी ति द्विः ॥ ॥ ४३ ॥ **यथा परिफरः ॥** ॥ यथा ॥ ॥ सु चा च रा ते म धु रा ग ति शी  
 तो ऽ च रो ति पी तो व सु धा र मा पा ॥ ॥ सरो ज पत्रा प त हो य ना या मनो ज न्ये पि नि ह ति ता पो ॥ ॥ यथा जा ॥ ॥ फो कि न

या हा



12971



[illegible]

1172v

א-ת-ו

हमेता दरी गति मुषे मि पिरु कृ मेतत् ॥ ॥ २६ ॥ ॥ ॥ इति श्री भगवत्पादोपाय चंचली  
संगिः सभा सिमग मत् ॥ ॥ ज्ञेय विनायना ॥ ॥ विना ग रागेन तवांगे सुगां  
लाक्षां च विनैव रते ॥ ॥ पादारविंदे रविंदनेत्रे विना जनेन ममिदं च नी हं ॥ ॥ १ ॥ ॥  
पपाका ॥ ॥ हाक्षार जित मायतासि कृत्तपे पिपाधरते ॥ ॥ सुएं प्रात म्यात कनी निरुचनय  
नरपा मपि ना रुज्जल ॥ ॥ स्वर्ण लंकरां विनैव सुचिरा त्वं मे सुरा पप्रिये का स्मी रद्रमं  
रेन सुरमिशपा मेतवे दं वपुः ॥ ॥ २ ॥ ॥ यथा का ॥ ॥ सकृत्त वा कृत्त वा ॥ ॥ वहा पा दृशा ॥ ॥ राक  
लेपा सकृत्तः स वलः पुमान् ॥ ॥ सुपिजिते विजिते रुम बुक्ता सन पथा सन पः स्मृति  
मेतिहा ॥ ॥ ३ ॥ ॥ यथा ॥ ॥ जेखे ॥ ॥ ज्ञान भरजितं तत्त पथ शान्ति म्या जिते दिपलं ॥ ॥  
स्त्री सैग मेपि जमयाधिप स्प स्मरस्प जेत्त त्वमहं तमी ॥ ॥ ४ ॥ ॥ यथा ॥ ॥ पाथा  
एतो ॥ ॥ जायत कापि वल्ली म हल्ली पगे ॥ ॥ रंजपुरा दधाना ॥ ॥ स्था एत सत्ता च चक्रा स्तपवर्ण  
दत्ते फलं पूर्णमिदं विचित्रं ॥ ॥ ५ ॥ ॥ यथा का ॥ ॥ तकारा शं कृ मे म हं प्रसमी दये जाते प  
रस्मि बदनं पुजपो रिका शः ॥ ॥ दृष्टां पुजवपि कारा विधिं निशाया मम य नृत्यति मुदा कित लं जरी ॥ ॥

पाहेर



नो मुदेमं जुमरं दनघः ॥ १० ॥ न धां च न धां हि मशीत गं धो गंधे च गंधे भ्रमरी सुनृत्यं  
 ॥ ११ ॥ नृत्ये च नृत्ये च कृतस्वरोपं स्वरे स्वरे चारु हतकानुवृत्तिः ॥ ११ ॥ हृदये हृदये कामक  
 लाः कलासुक ह्रासुरागो मदिता यतासि ॥ १२ ॥ रागे च रागे कृतगीतिराक्ता गीतौ च गीतौ च वि  
 लासना एतौ ॥ १२ ॥ वा एषा च वा एषा परिहासपूर्वं दो हागतानां रमणी जनानां ॥ १३ ॥ चतुर्भिः कृतापक्रं ॥ १३ ॥  
 पथासंख्यं पथा ॥ १४ ॥ कृताचरं कृत्य हतं कृतां मुखस्य देहस्य विहोचनस्य ॥ १४ ॥ जयति वा न  
 र्दपमा र्दयेन मानेन संतर्जयि मानि नित्यं ॥ १५ ॥ पर्वपथे पथा ॥ १५ ॥ त्यक्तं मृदुल्य मुरसा च पथा  
 गृहीतं मुग्धत्य मापि न दनेन हृदा सिंहीतं ॥ १६ ॥ पादपीत रत्नतां विजृही नभार नेत्रद्वयी वृत्त  
 नो रत्ननोः प्रभारात् ॥ १७ ॥ शाब्दः पर्वपथे पथा ॥ १७ ॥ कारीतिरेका तयजो ह नेत्रे  
 कामोपदिष्टा प्रतिभाति कृते ॥ १८ ॥ पूर्वदरेभ्यो तसि चारुवक्त्रे माना हृदयेऽथो वसति कु  
 धात् ॥ १८ ॥ सकोचपथे पथा ॥ १९ ॥ त्रिषोपराधे नवरोन मा नो विरु  
 ढि मा स्ता हृदि जीहितेऽस्मिन् ॥ २० ॥ नेत्रेऽथ पादप्रणते मुकुं देशनेः समानो विहृतं

जगाम ॥ २० ॥ विकारापर्वपथे पथा ॥ २१ ॥ हापराधे त्रिषे पूर्व त्रिषे मानो  
 हृदि स्थितः ॥ २२ ॥ अमुना नपने वाचि सर्वां गे व्येष दृश्यते ॥ २३ ॥ सत्पं वाहिरात्  
 त्मकी कृतज्ञा वेकनको सोऽभयको मास्व मनो रतिस्त हता ता प्रीता वने दो सुखाः ॥ २४ ॥  
 देवेका वशतो विहोचनपथं नापासि पत्तत्तस्य संग स्यात्म रते रते रपि कथं वा स्तंगता  
 मीयते ॥ २५ ॥ परिवृत्तिर्यथा ॥ २६ ॥ रसेन पाद्ये कुसुमेन चार्घ्यं दत्तेन संपाद्य  
 न वासनं च ॥ २७ ॥ समागता पाऽतिथयेऽहयेऽज्जी ता न धा कीर्तिरिषं त्रये च ॥ २८ ॥  
 ॥ २९ ॥ अथ परिख्या ॥ ३० ॥ जे पागुणा गुणावता गुरो र्वन भूपतेः ॥ ३१ ॥ रांकरस्य  
 कथा पयो दा रादा कथानि ॥ ३२ ॥ विकल्पे पथा ॥ ३३ ॥ जहीहि हा ज्जा मय  
 वा त्रिषेना कुलीनतां कामदं गृहाण ॥ ३४ ॥ यथा रुचिः प्रेमविधौ त वस्या तयाऽचरत्यते  
 र हापतासि ॥ ३५ ॥ समाधि र्यथा ॥ ३६ ॥ पावत्त्राण मेच व ह्यु वाग्भिः करो  
 मिपत्त कुट्टि हापता स्याः ॥ ३७ ॥ मानोपनो दा पदयोः सकाशे विचरमा से स्य हाता ज  
 पिदोः ॥ ३८ ॥ समुच्चये पथा ॥ ३९ ॥ जायाय राधा त्वे पिमाधनय स्नेह समाराध्य  
 विपागताप ॥ ४० ॥ समेतमूर्खा विजयत्यजस्व त नोति दुःखं प्रहृष्टपत्य वरं ॥ ४१ ॥

१३

त

स

न



यथा जा ॥ ॥ त्वयि विहोचत्र गोचरतामि ते वरतनु र्ज्ययपाति निवीडिता ॥ ॥ विह  
 पतिप्रहपत्य जलोकोतु सति सुष्यति शोपति यदति ॥ ॥ २५ ॥ ॥ यथा जा ॥ ॥ गहो  
 रतकाहिमा तनुतले भुजेगाहिमा ॥ जिके शुचिकराहिना नवन गोए कोः शोहिना ॥ ॥ विहो  
 मदनं कुपाय दनपं क्रजे रक्तिमाजिगे म नसि विस्मयं विदधति जमो जामशः ॥ ॥ २६ ॥ ॥ यथा जा ॥ ॥  
 जुक्तिः शुक्तिः सम्यक् चिह्नं विधा विनेकिता ॥ ॥ वयो वंघुरता नैष रता निमदपेत्वे ॥ ॥ २७ ॥ ॥  
 का रक दीपकं यथा ॥ ॥ गोपातिपाति संभाति संभाति हृदये पुनः ॥ ॥ तिरस्करेति हसति तु  
 नराहिं गतिप्रिया ॥ ॥ २८ ॥ ॥ यथा जा ॥ ॥ जेमतः जियत मे स्थ शत्रु रो मोदते हृदि तिरस्करेति च  
 ॥ ॥ ॥ हो जते हसति हंति मा हा पा मा हा पा कृति मान मान सा ॥ ॥ २९ ॥ ॥ जेत्पनी कं यथा ॥  
 तज विरह निषेधां हंति मा मे व नार स्या दम हा तनु शो भा निजित स्वत्प्रसक्त ॥ ॥ कथमिव निज को  
 तो व्याधि मा हा जली ठा न तनु रा र भ पा तं ना य नो पा सि साधः ॥ ॥ ३० ॥ ॥ का यार्थ पति र्थ यथा ॥ ॥ १४ ॥  
 मुनेन ते तन्निजितः सुकं शुः का तन जा र्गी रा शि ना जित स्वा ॥ ॥ सरो रु ह स्प जम दे पि जेतुं जेतुं त पा ते  
 भु कुर स्म विवे ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ का य हिं गं यथा ॥ ॥ तत्र पदार्थ हेतु को यथा ॥ ॥ कुलं च शी लं च विह

हारि

रसपरिमल संगां हारिदं गां हचिरनयन भंगं चातुरी चारु संगां ॥ ॥ शयकिरा हप कांतां कामतां  
 तां च शांतां प्रजयन त्वति कांतां कृष्ट कांतां भजेम ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ कामो न्मतां शी त सौं प र्प स तां दोषैर्मु  
 तां चातुरी युक्ति युक्तां ॥ ॥ जेमो पा रं ना य के नी ति सो रां सा ध्वी भा र्थ पी त मा ध्वी त्प जे लः ॥ ॥  
 ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ जेथ का रण मा हा ॥ ॥ जा स्या दे न र सो भा ति र से न कृ वि ता त या ॥ ॥ जाणी सं रो भ ते  
 ना एषा स भ्वा लै र च स भा त या ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ एका ज ही यथा ॥ ॥ प्रिया पुत्र वती जेष्ठा पुत्रो विधा समन्वि  
 तः ॥ ॥ विधा ज्ञान प्रदा ज्ञानं शुभं ग र्वा प हारि य त् ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ यथा जा ॥ ॥ जगत्कृतं येन च यो ऽपि  
 त स्प पे त स्प पी पू ष म पो म पू लाः ॥ ॥ ते भ्यो ऽधि का ते ऽध र मा धुरी यं मु धा न वा णी म म च  
 च हा हि ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ मा हा दी प कं यथा ॥ ॥ चा प ह न न प ने न प ना भ्यां शो न योः शु ति पु र  
 न कथा पां ॥ ॥ शी ध र स्प च त पा पि मु नी तां मान से च वि हि ता स्थ ति ह द्यैः ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ जे श्वा ध्व  
 गु एो क र्थः सा रो यथा ॥ ॥ निः सा र र जै ष भ यो भ ये भू भू म्या म सा रा नि रि प ता श्व ता रा ग ॥  
 दा रै र मा रा ह र रूप का रा कु पी स सा रा ऽ ह मा प तां च ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ज्वा ध्व गु रो क र्थो यथा ॥  
 गि रौ गि रौ कुं ज कु पी च कुं जे कुं जे ल तां सु च ता सु पु ष्य ॥ ॥ पु ष्ये शु पु ष्ये ष ह सं ति कां ता न











तिर

जं चरं गी चकार मं नि ह म न सं स्या ॥ ६६ ॥ ॥ ज्या जोक्ति र्पथा ॥ ॥  
केत की कु सु म चै मि ध्रु वं चू त रा मि स रि प श प तां ज तं ॥ ॥ क ए के न कु च को र का पि  
मौ लं डि लौ च र द न दू दो हि ना ॥ ६७ ॥ ॥ गू ठो क्ति र्पथा ॥ ॥ रत्ने पंच पि प मि  
नी त्र दु प ये मो पं द धा ना नृ शं जे म्णा प म वि हो च ने न ह स ता त्या मी क्ष ते सा द रं ॥  
ए तां त त्व म पि प्र भो नि ज क रै र्णा हिं प तु षं कुरु जा पो र क्ते ज ने नु रा ग गृ ह नं पु त्तं  
हि तं गो प तेः ॥ ६८ ॥ ॥ अ पं शो को म कृत ह्नी जा व ती च पू ज यं च जे यः ॥  
वि रू तो क्ति र्पथा ॥ ॥ र स प्र दा सौ म धु प स्य प मि नी वि भा व पू र्णं ज ह जे क्ष णा  
स र रे ॥ ॥ नि वे द प त्पे ष ण दार चै र्प ना त्र क पि लु ला कृत मि दं चो ऽ मृतं ॥ ६९ ॥  
पु क्ति र्पथा ॥ ॥ र प्यं त रा हे व्र ज ता घ सा पं सं च द मा ते ति नि वे द यं ती ॥ ॥ तं  
स्मि नृ क्ष रो नी स्य प तिं व प स्या मा ते ति नि द्रा च ग ता नि शा च ॥ ७० ॥ ॥ दे को  
क्ति र्पथा ॥ ॥ स ती व्र तं स ती वे ति जा रि णी जा रि णी व्र तं ॥ ॥ पि शु नं पि शु नो वे

ति ला धुः सा धु व्र तं स रे ॥ ७१ ॥ ॥ व क्रो क्ति र्पथा ॥ ॥ का ऽ मा नि मि त्र द पि ता  
श मि मा न सा हो क्ता पा दि ने श त रु णी रा नि व त्स हा स्ते ॥ ॥ हे मि त्र व ज्र हृ द यां र म  
णी व दा मि ही रा नु षं गि हृ द पा र म णी त्व मे व ॥ ७२ ॥ ॥ का का पथा ॥ ॥ हि मो  
ज्य हां गं च त त क्ष कां गं शि रः प्र दे शो द च दं नु गं गं ॥ ॥ क लो त मां गं भु ति भू षि तां  
गं मृ ह स्त पो मिः स रि नै ष्य ती दं ॥ ७३ ॥ ॥ नि रु क्ति र्पथा ॥ ॥ भू त्या त्रि शू ली त  
व लो क मू नी भू तः प्र भो भू त प तिः प र स्य ॥ ॥ अ धि न जा ना सि त तः प्र सि ष्ठः स्या  
गु र्भ ना स त्व मि दं प्र ती मः ॥ ७४ ॥ ॥ स्य मा वो क्ति र्पथा ॥ ॥ ज हां त रे वी क्ष  
रा र त्स धां शुं गृ ही तु मि छु स्त र ला य ता सं ॥ ॥ अ प्रा प्य तं मा तृ मु रं नि दी क्ष पि क्षि तौ  
हृ द नं प लु तो ह रो द ॥ ७५ ॥ ॥ भा वि कं पथा ॥ ७५ ॥ ॥ आ क्षा रं जि त म ध  
र दं चा सी दि दं तु प र मा मि ॥ ॥ सा का कु र्वे ता रा नृ च र्त्तु व सो ज पु म ते ॥ ७६ ॥ ॥











ते ॥ गचिते नैव पदं करोषि कृपणः किं पञ्चनाभोसि वा दत्ते नैव न हा उडा से वि जगतां ना पोसि किं कृ  
 महे ॥ ११ ॥ ॥ आगत्य स्मरणेन कं जरपते वै कुं वै कुं तस्तर्हि चंद्रमुं पी पिताय कर्मलो मुद्धार मस्फा क  
 रो ॥ ॥ वारं वारं सुदारसा अनुतिभिः श्री हार संभाषितो व्यात्मा धार मयान तु व्युसि विभो किं पञ्चनाभो  
 चित ॥ ॥ १२ ॥ ॥ केषां लोचन गोचरः कृतपुगे नाभः सन्नो न वा नेता यो मपि तावकी जनपुरे  
 व्यक्तिः श्रुता द्वापरे ॥ ॥ राधादिप्रज सुंदरी पदपुगे स्त्री पंशिरः स्थापितं दोषः को नु कलेर ले प मपि तज्जं  
 ते नैव दृग्गोचरः ॥ ॥ १३ ॥ ॥ वेदाय स्पृगा गंगाति न पुनः पार ह भंते ज राधायाः पदपं  
 कजेने प तति नै लो क्य ना यो पिसः ॥ ॥ स्मारं स्मार मिदं विचार क हितः सुदृढो ला मितः  
 किं राधापि नुमा नुमा नुम हितं किं पञ्चनाभोसि भुं ॥ ॥ १४ ॥ ॥ यन्नाभ्यु वृजता वि रचि रभाज  
 तस्मा त्रिंशो की त हंत नम्ये प्रज वासिनः सुकृति नस्त भोपि ते सांख्यिकः ॥ ॥ येषां पाद  
 सरोरुह श्रुति शिरो भागा स्थितं तन्महो ध्ये पं सत्सु लभं महत्तरमै श्री पञ्चनाभा सिधं ॥  
 १५ ॥ ॥ कामं काम कला कलाप वि रुद्रो दृष्टं कला संकलं स्मारं स्मार महो महो जल महो रा नं म  
 हः

३०

प्रतिषेधोपथा ॥ ॥ न का ह कूट न चो पहेन न वहिना ऽकारि एव हो वषस्प ॥ ॥ किं त्व प्रतीक  
 र विचार भावः एव हः स ह नैव वि निर्मितो ऽस्ति ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ विध्य त्वं कारि यथा ॥ ॥ हे भा  
 त हो च न पिशा ह विमो च ना प दुः एव स्प मे कु सुम ना रा व रोग ना पाः ॥ ॥ दा हं कुरु त्व मधु ना  
 मधु ना स है व सं हार कुरु रत नो रसि ते द पा ध ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ हे त्व हं कारोपथा ॥ ॥ अ प म पं र  
 ज नी पति रा गतः सुत नु मा न नि यति कृते कृती ॥ ॥ त्व जे हं त नु त न्नि म नो जतः जि प म मुं स रि व  
 र क्ष नि ज स्मि ते ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ यथा जा ॥ ॥ लक्ष्मी भरा गो कुल सन्नि वासि ना रुपा रुद्रा साः क  
 म हा वि लासिनः ॥ ॥ आ नं द धा रा प्र ज प्रा वि तां तु ते त एव मो क्षः पर मा त्म वे दि ता ॥ ॥  
 ॥ ८५ ॥ ॥ अ लं का राः स रा न्ति ह हित ता रा इव म पा गु णो दा रा धा रा वि ग हित वि कारा  
 वि र चि ताः ॥ ॥ र सो ह्ता सा वा सा वि नि हित वि का रा ऽ म ल प दा पु धाः सं शो ध्ये ता न पि प च त सु कं  
 ठ सु कृ ति नः ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ॥ इति श्री भंगार सा ला पां त्रि वे दि सु कृ पि स र्वे श्व र वि र चि ता स  
 त्ता मी भं गिः समाप्ति म ग म न ॥ ॥ ॥ शुभं भू वा ह्ये एव क स्य पा द क स्य नं थ क र्त्तव्यं ॥ ॥



ॐ इति मंत्रितुं विधिनेषि शासितुं त्रिपलमाः परपुष्टः आकाशमन्त्रनाम मन्त्रका होमा पचात्यति

मन्त्रमदनाशो ॥ ६ ॥  
॥ मन्त्रो मन्त्रमन्त्रो मोदकारिणो हारिणो ह्यमी ॥ ॥ मन्त्रो रमापिरां जंते ज  
संतु स्यैवा सराः ॥ १ ॥ सुमं जुघोषः सुमनो मनो रमो रमो ज्यतः सन्ति लज्जः सुजातिः ॥ पिरा  
जमानो रसिकेन केन नाराधिका मो भुवि माधवो यं ॥ २ ॥ पसंत मुख्या मितयः षडत्रयथा  
वने सन्निहिताः सदैव ॥ जसन्ति नाना फलभाखत्योः हताः जसूनैः कलितास्तथैव ॥ ३ ॥  
मिलिंदगुंजा रवरो भमाना माना जमाना कलिता ह्यंजा ॥ सपुष्पपुंजा हवली नि कुंजा  
पस्मिन्वने चित्तमपा हरति ॥ ४ ॥ सुगंधिना मंदलमी रणेन सारिंदराभिः शिशिरी रुतेन ॥  
यन्मंदनारव्यं पिपिनं सुरीणां रतममं कनिहरत्य जासं ॥ ५ ॥ मिलिंदं यंदैरुपगा पती वगुणा सु  
राणां पिकका कुलीतिः ॥ स्तुतिं करोती च वनी पिराजा सुरंग नानां सुकृत प्रियाणां ॥ ६ ॥  
तमा हमा लिङ्गपिरा ह मकंगता हता सो परवर्णिनी च ॥ न कस्य चेतो हरेते मनो जा गुह्यस्त  
नी प ह्वाय पाणि पुक्ता ॥ ७ ॥ पुक्ता मिहिंद कलकिं किणि कारयेण पुक्ता नुकार कुसुमप्रज  
मा जवाच ॥ कीरा जह सनप ह सकभूषिता च वा सतिका सुरवधू रिव यचताति ॥ ८ ॥

रसेन पाचं कुसुमेन चार्घ्यं पलेन संपाचन वासनं च ॥ ॥ समागता पाति यपे ५ त्रये ५ डौः श्री  
ता ५ न धा कीर्तिरिपं वसंते ॥ ९ ॥ ॥ अथ निदा धवर्णनं ॥ ॥ पाटता परिमहो कपाहि  
नः पाटपाधिक सुजेग चारिणः ॥ ॥ वायवोत्र विपिने विहंगमा नृत्ता मपंति निजा च  
क्रमांच हैः ॥ १० ॥ धूस्ती कंदं यपि हिता शिशिरा स्य लीपं पुर ह्वा छिरीष कुसुमे रति  
सुदरीष ॥ संजायते बहुमुप स रसी रसा ह्यंजां च कारित तटी रपि रस्मि हीना ॥  
अपि च ॥ हस्ति छाया निषण्णः श्वसति घृण पतिः नीष्प्रतप्ता मृगं प्रच्छाया छनौ मृ  
गा सो मृगा पुर पि मृगा छाया पा जारितार्क ॥ तच्छाया पांशिरं डी निज पुपति पुतस्तन  
हो ५ सो फणींद्रः छाया पां तत्फणा पाः कृत वसति रतो विक्रलो दंडु रभ्य ॥ १२ ॥ ॥  
अथ वर्षा वर्णनं ॥ ॥ विहो कनायैव शिरां डिस्व न्यपस्य विद्वन् यनाति रामा ॥ ॥ धारा धरा ली  
धर्तारि धारा धरामिवा पाधरणी चरस्य ॥ १३ ॥ जीमूत जीव निज जीवन मर्प पितो दुन्या कुहा  
पसुकुला पगचातकाय ॥ जीमूत नाहन पशो भवते वतु व्यत्य जीवनं जगति लार्थक मवमन्ये ॥ १४ ॥



गंधेत्कृपंता जतमाह्वीप्या संकेतकुंजं कमलापतापताक्षी ॥ १५ ॥ धाराधराणं पीदयारिधाराः करव  
 हं कोपनचेद्रुपुः ॥ १५ ॥ पस्मिन्कंदनाभ्यरुदंजपुंजे पुष्पाणि पुष्पेषु मरुदधाराः मरुदधारा  
 सुमिहं दमाहा मिहं दमाहा सुचंगुंजितानि ॥ १६ ॥ तदुजितस्य भवणादि वैष्णो शिखापलानां कुट  
 जेषु नृत्यं ॥ पञ्चप्रकुर्वति पि जोजितानि चैतानि भो पंसु मे नस्तु पूनां ॥ १७ ॥ चतुर्भिः कालापकं  
 ज्ञापिच ॥ पस्मिन्निकुंजा पि हसंति कुंजे कुंजे हतास्ता सुचता सुपुष्पं ॥ पुष्पेषु पुष्पेषु मरुदधा  
 राधारा सुधारा सुचरीतगंधः ॥ १८ ॥ गंधेषु गंधेषु मिहं दकांता कांताति नृत्तानि सुखप्रदानि  
 नृत्येषु नृत्येषु कलस्य नानि स्यने स्यने चारुतपप्रसंगः ॥ १९ ॥ जपे हपे मानसमोदकारी हारी  
 तरारातिरसप्रकाशः ॥ रसप्रकाशे चरत्प्रकाशे रागोदयस्तत्र चतवर्गीतिः ॥ २० ॥ गीतौ गीतौ मे  
 जु संगीतमंगी मंग्या मंग्या मय्यपो हापि ह्यातः ॥ तस्मिन् दिव्यस्त्री जनानामुदारोदारो ह्या सो पत्र  
 पुरैपकलभ्यः ॥ २१ ॥ जस्मिन् दिव्यस्त्री गंधर्वी गणिका गणै न सहिता गावन्ति यस्मिन् पने देवा  
 पवतनापिका पकलिताः कुली कला राहिनः ॥ मंदारदुमरुदपिंदुमधुरामा नंदददप्रदामापी  
 या उचरमाचुरी निधुवनं कुंजेषु संकुर्वते ॥ २२ ॥

२१

पंचदश

हो ये ह्वयं ॥ ॥ सारं सारसभासमाक्षमसमाकाचित्समागोपिका तारं तारपशोऽपशो मिज  
 पशो भातंतदासी नमः ॥ १६ ॥ कदाच्यरत्नं कमलास्यदत्तं ताराधिपत्वं रुचितासितत्वं  
 समानमिंदोत्वपि चेश्वरे च दयाधिके शोविभुता च भूतिः ॥ १७ ॥ कुमुदचंदुरत्नं चुरति प्रभः कु  
 मुदे हृदेति मुदममा ॥ कुवतुपं वतपन्निजोचिषा कुवतुपं दत्तपनरुचिरत्विषा ॥ १८ ॥ ज  
 ज्ञाभूषितविग्रहः सुमनसा वंदे न संसेवितो रक्ताशो कमनो रमाह्विपि हसत्संतान संभाषितः ॥ १९ ॥ क  
 मानंदकरो वियोगवहितो यो मंजुधो धारयो गोमोगी न हितस्तनो तुलहितं वः सर्वदो माधवः  
 ॥ १९ ॥ साधि का हरिमुपां निराधिका साधिका यजनता पयाधिका ॥ नाधिका मपुपाप  
 राधिका राधिका रतिरमाधिका मुपे ॥ २० ॥ राजीयो जनपां दुरधुति रजो राजी भिरारंजिताः  
 कोकी कोकिल कोक कंकुररी कोलाहलैः संकुलाः ॥ सर्पद्वर्कद्वर्क जोर्ष कसमारंभाः सरंभा ह  
 यो का संती वहिता विपोग ललिता वासंतिका वासराः ॥ २१ ॥ समंजुं जा ह्यतपुष्पं  
 जामिहं पंगुं जारवंगुंजिता च ॥ रसाजवाला पित्तसत्प्रवाला रसाजवाला नमुदंति कस्या ॥ २२ ॥



22

शारदेऽत्र समये विराट् दोहै मरुषस मयो विराजते ॥ शीत कुंद ह क्रुता क्रुं यितो यत्र पुण्य  
 रिपा कृपा हितः ॥ ३५ ॥ तथा हि ॥ औद्धतं तनुते निरुंति नितरां द्वैतं सुखं सर्वपादूतेशीत हतांत  
 नोति हृदये हं हृदये सत्ते मतः ॥ वेदांत स्पष्टि चारणो जसु भगो हे मंत क्रुतः प्रभुः प्रपान् पत्र  
 विभाति नाति च मरुत रशौ तै क्रु सं न्म दिरं ॥ ३६ ॥ हे मंत संगत इव प्रसरत् प्रवृत्ताः संराजते सं  
 राजते शिशिर एष मनः सुरपाय ॥ कुंद प्रसून नि करै हिस ती प मंत ते जो धरं दिन करं नि ज के नि  
 का हे ॥ ३७ ॥ पञ्चानां विस्तौ विपोगा कृतिताः पुष्पं च पाः सा च वः सं प्राताः शिशिरे मरं द  
 नि करैः कुंदे न प तर्पिताः ॥ तन्मन्ये कुसुम ह्वले न विमहा कुंदे पुतत् पुण्यतः कीर्तिः कापि सु  
 पुष्पिता विस्तसति प्रा हो परस्मि प्रभा ॥ ३८ ॥ नितो त कां ताः क्रुटि ला हो कां ताः काम स्प कां  
 ता इव देव कां ताः ॥ रतांत तां ता न तु दुःख तां ता ल सं ति प स्मि न् वि पि ने ह तां ताः ॥ ३९ ॥ नी पा व  
 हा पितं ति हा का व जी ति र्जी तं च मं जु सुरा रु नि कुं ज पुं जं ॥ न्ये ना च शा हा कृति तं ह हितं ह  
 तां तां त न् नं द नं व न मु पा र मु द वि भा ति ॥ ४० ॥ कृत्वा इव मे धं रा त क्रुटि धा टी ला टी शत क्रु







पद्मप्रपराः ॥ जातोपूतसरोजराजिरजसापांशूकृताः सांजतं पद्मपेतरितो हरंति हृदयं सापं समस्ताः पु  
 नः ॥ पद्म ॥ किंच ॥ गुंजति ममराध्वमेतिपरितः पद्मावहीना ममी मंदमये मरंदकणिकापा नेन मन्ताभ्य  
 रौ ॥ कोकली च सरोजिनी दहत हृदयं च कोकजि यं नो दृष्ट्वा भ्रमि मात नोति पक्रिता कोहा हलं कुर्व  
 ती ॥ पद्म ॥ किंच ॥ कुह्लोभो जपि लोचनैर्विकशितैरक्ता रविं पद्मिनी दृष्ट्वा पंक्तजं पुजं पुरुरजो न्या  
 जास्मिन्तं तन्यती ॥ स्मृच्छातस्य महो ज्येष्ठस्य च क्रूरैः पुष्पं च पात्नी मिषात् भृंगं गारंज कटी करोति  
 किमु सा प्राणैश्चरस्यामृतः ॥ पद्म ॥ वनमा लीवमा ही ङः सुमाली गोप संतुतः ॥ वनमा ही न  
 चपला संगतो गण एककः ॥ पद्म ॥ तदग्रे च सत्तम प्रा क्रूरैः सौवर्णैः ॥ सौवर्णैः पररास्त्रिहो कशा रं  
 दीपा नितो निर्मितो जाला की पुतक्रोडि क्रोति रुचिरः शाजा सहस्रो ज्येष्ठः ॥ संता न दुम शाहिनी सु  
 हाजिता पुष्पावली माहिनी यस्मिन्नेम हातावनी विजगती प्रेमप्रपा राजते ॥ पद्म ॥ वीची पाहुचये  
 सुधां बुधिपुजाये लावधू पीतनुं से परपत्नि पचमी ननय नैर्नित्यं समाहिं गति ॥ सा ये जापि पित न च देव  
 विदधि नामात्मकैः पाणिभिः स्वीये सं जलधि च नीरपति तै राहिं गती वज्रियं ॥ पद्म ॥ तदभ्यंतरे

२५

पद्मं शुष्कस्फुरि कृशक हौं तराले प्रपातैः सापा ना ली सुधा चित्त तपिशो ममनैः सरस्तत् ॥ रांता  
 कायं मलममृतं त्यात वत्स जना नाशं तं पस्प प्रचुरी तम वत्स्या दुमोदं पिचने ॥ पद्म ॥ तं सुप्र  
 चरंति चारु गतिभिः सौरभ्यं सुरीणा मीपस्यंते संजनयंति संतिसुरियनो यस्मिन् रविहंगाः परे ॥ तारीत  
 निहंति मंदमहायो गुंजति पुष्को किला गापंति ध्वनिमुद्यंति चरुकाः कूजंति कोयचपः ॥ ६० ॥  
 पत्नी रस्य तमाल ता हाति हाको तुंगा नशाखा वली छापा कुन्निषत्त हरे विमना होयत्रि योमा  
 चिपा ॥ कोका ही सुधितापि नाति पिसिनी कंदं दृष्ट्वा र्त्तापि नो पानी यं पिपति जिपामपिन जालिं ग  
 त्यनंगार्दिता ॥ ६१ ॥ केलीभिः कृतिताः कंदं वशिरपरे केक्रिप्रजाः केकपार कर्णानां जनयंति सौरभ्यममि  
 तं कृत्वा एतत्पाः कहां ॥ यचञ्चु पुटेन चारु पिसिनी कंदं स्पक्रोडि मुपा चं स्पभ्यमतश्च कोर हातनाभ्यु  
 यंति प्रतूरगाः ॥ ६२ ॥ कदा कलं कलं सगणाः कचिक्क लरवं कलं पंति रुक्मः कचिक्क परिपंति च  
 कोकला जितास्त हकुलाय गताः किल कारिकाः ॥ ६३ ॥ मंदारो पारशाखा सरस सुमनसौ माहरंतः  
 सुगंधान् रौजोरोहापरो ह्रजमशियि लजपाः स्पर्शं दी स्पर्शशीताः ॥ सापं जगतः प्रशस्ताः कुसुमशरसे



दत्तासिपेशंतपूरेवीचीरां पो हपंतो मनसि सुमन सं गंधका हापंतति ॥ ६४ ॥ म हची व हची असूने ज  
 हितमचुरसो द्वा रं गंधि रीपा नुतुंगे मनु चंद्रप्रकृति तसुरस्त्री ऊचारो हनेन ॥ रिपन्नेः किन्नर्यतस्म  
 त्वरितमचरन्निपि हिलासंपत सनपी पूषा मोधिपातापतिशिशिरतरः शंसमीरो विचते ॥ ६५ ॥ ए न्नी  
 तन्नयमं जरी मधुरसा स्या दो हतसन्मानसो मत्तभ्याम्यदतिव्रजाति दहितो मो जक्रिया हां कृतं ॥ की  
 शसक्तकुहापरत्तकहांसा त्पंतमो पा वरुं मे पा र्दुम वाटिका वहापितं यत्पह्य हंरा जते ॥ ६६ ॥ सा के  
 स्या नुगताभिराभिरमितो भृंगीति रा कृपितैः पक्षाणां निचपैर्वितानस दृशौ राक्षा पयंतोऽवरं ॥ मं पारे  
 मकरं दशाहिति मधौ फता वधाना मं पं मो पं सं ज्ञन पंति यचनि नैर्दे मतामि हिं पा कमी ॥ ६७ ॥ तद्वे संतस  
 मीप एवरचिते जां वून दत्तामहे मुक्ता विदु मही रनी हमाणाति श्रित्री कृते मं डपे ॥ दारे कृत्पत रुक्रिया  
 तु हाहिते मत्पुं जप स्या मिनः से नान्या च गणा धियेन फलिता मूर्ति श्य सो मासि सा ॥ ६८ ॥ तद्द्वारमार्गे  
 नैच कृत्प वृक्ष शाखाः प्रविष्टाभ्यविनम्य तस्य ॥ अभ्यंतरे मं डप वन्महेशो देवो परिश्री स हिता त संति ॥ ६९ ॥  
 XX गुंज नमं गुमि हिं पं प मधुराः सन्मं ज्ञुधोषारवा जाती जावरसा हरा हनुकु हस्तो मेः स पा वंधुराः गां नेष्वा मं

स्मि यदना सम हं कृतोऽति ॥ पन्निः कु य वन कृते सुकृते न पूर्णः पूर्णोऽपि स मशुद्धरुचिः शुचिश्च ॥ ७० ॥  
 तदने आ पस मपे जा कोर द्वितीये ॥ का ही प दां उजम धुयत एकरवशा ही नता दहित चंद्रमुखी  
 सुरा ही ॥ पस्या वना प नियतं निपमा नुसारी तारी गणो गणवरः सुरवरूप आ से ॥ ७१ ॥ तद  
 नि तृतीये अष्टधा तु मये जा कोरे ॥ दामोदरो धमत नुर्वित नु जमारेण मानो नतः सुतनुदा र्दुतो महीपा  
 न् ॥ रक्षो करोति पित नोति सुरवं मवा ज्येः पारंगमो गणवरो हृदयं गमय ॥ ७२ ॥ तदने चतुर्थे रंगम  
 पे जा कोरे ॥ मेहन पुक्तो महता नमुक्तो मुक्तो पमां गी कृतगीः सुमुक्तः ॥ पुक्तो पमा भाति शिवा निपुक्तो गणा  
 प्रभुस्तत्र विभुत्व पुक्तः ॥ ७३ ॥ तदने पचमे ताम्र जा कोरे ॥ ताम्र जा कोर पूर्णो जत पित तत रजो  
 त देशे सुदेशे दीपे तस्मिन् विशा ह्ये रिज वरत रुभिः शोभमाने समंतात् ॥ शुद्ध स्यां तोऽति कां तो गणम  
 ए नृपतिः स्वी प को ता समेतो हतो स प्रक्षणा स्पर्शे ज भवति वि हसत्ये क को सौ गण र्यः ॥ ७४ ॥ तस्य  
 जनतः रजत जा कोरे षष्ठे ॥ पीपूष सरसी त्वे काशो भते पत्रशीतहा ॥ यस्यां कीं इति विहगा विहंगीभिः  
 संमं सभाः ॥ ७५ ॥ सारंगा पत हो चना ह्वनि जज्ञे यो विपोगा तुराः पुष्पाणां मिषतो मनो जविशिरैवे



[illegible]

जरास्तत्र कामोदो घन्यतामं पंतर्गतं पुंन माणा कृपे दीप्तसत्पन्न संशोभिरां भुजिपां कृष्य  
 तिज्जा तमो दो घन्यतामं पंतर्गतं पुंन माणा कृपे दीप्तसत्पन्न संशोभिरां भुजिपां कृष्य  
 वनी नीलकंठजिये ॥ नीलकंठजिये ॥ रां कराराधिके ॥ भक्तभुक्ताधिके ॥ उद्धि संपादिके गौरिगुर्वादि  
 गीर्वाण संस्तूपमानां धिरेपन्न निष्पादिसं निध्य संशोभिते सिद्ध संसेविते सिद्ध विद्या जेद सिद्ध रं द  
 सुत राजराजेश्वरि श्रीमत्ताराजराजीवयो न्यादि पुंजाचिते राजराजराणीतस्तना कर्ण न प्रम संभा  
 पिते राजराजीवते नीलराजीवतु ह्यो ह्यस ह्यो चने राजा नक्तो ह्यस द्रक्ति भाव प्रसर्प द का भावि  
 ते देहि वो घोदयं दे पितु न्ये नमः ॥ ॥ कृत कृधटितमं जुमं जी र रत्न प्रभा शोभि पां गुरु ली भा जि  
 तो ह्यो गिरक्त जघा हां कुरे पाद पन्न द पां गुरु चं चन्त रेवा निद्रा भा निर्जितो तुंग चंद्र प्रभे ॥ गुरु ल्य शो  
 भा चरी भूत भूपन्न मे मं जु जं धाद पी धि धृतो दामरं भादि जां वून दस्तं भू दं भा पहे ॥ श्री गिरि विं वा हत हो  
 स्या र्चि चंद्र प्रभे ॥ रां भुद नाणि मे श्वर्य राजा दिवनी पहन ज मे ॥ पूर्ण पो पूष कुं द भगं ती रना भा  
 कृ द ॥ ते ज सो पान मा न धि पि ह्यो हित जीव जी सत्प्र भा सत्प्र रा सी धा ह्यो ज पुं ना जि तो तुंग चं  
 गोप मे ॥ ॥ उतु ह्यो ह्यो सत्कं द रा भा च ह्यो ह्यो सत्पा ह्यो ज जा हा न ना भा ज सो र न प हा ना ग्य स भा र



सान्निर्जितं पुत्राभा सारसं भाषिते ॥ नाति कानिर्जित कीर्ति के लै क के लै ह तं ॥ भाग ज्ञाने नी  
 लपद्म सारो ॥ ७१ ॥ अज्ञाता न राचा पद्म मे ॥ सत्तज्जना काल भागा वना चा ह य ॥ ७२ ॥  
 नील के शोचन पद्मा त स दो ह स सा धित स्थित पद्मे पद्म ज्ञा भा भा स्य रस्म रस मो ह ना स  
 तिसं मो हि ॥ ७३ ॥ स ह्योचने पद्मिना चोद पं पदितु भवं नमः ॥ ७४ ॥ तु यन जन निचार मं पार हार  
 वही गुं फिता नाग दारा मिता येद सारा जमी सन्म सारा ॥ ७५ ॥ पद्मा भा रा उ दारा म म स्या त हारा म यं तु  
 रा प्पात धारा हर तु ज्ञा भा संकि रंतु स्तुता मं जु सिं हूर पुताः सु मु ता य ही संगता पे वि पे री मि पं से व  
 ति ज्ञा मो दं द पत्ने य मा मो द मग्ना मन भ्यं च री क स्य शं भोः ज्ञा मोः का पि भा ह स्य ही वा ह यं दौ ज्य हा  
 रत्न जा हो ह्य स त ज्ञा कून दो प्रा सि स त्प दि का र्क सिं हूर पूर ज्ञा भा सूर्य चंद्र धु ति धार पि ले प ह  
 भा उ ज त ज प ती ज प ती ह प ती च सं तो ष म त्प त न क्षो भि हे रा स्य भ ता व ही नौ म हा का म मं प ज्ञे  
 सा पं द पत्मा प्र चितो पु जे त्प द्यौ कार्मु क जी धरे नी ह र्ना व तं सा न्य ता ह म ता ण्क सं शो मि ता कृ णि  
 पा श द पी हो च ना त ह्य पि क्षु सा कां त्पु क्क रा मे व सं ती म नो मं दि रे का म हो भा पि प्र सि ध्र जो धं धि का चां

२८

तं ह्य र मा र्गे ण त प्रा गतः सा स पं क ज्ञा निर्म ह नी र धारा ॥ तं स्ना प पि त्वा गिरि शं च गौ री त पा ह वा हं परि पू र्य  
 भा ति ॥ ७१ ॥ तत्क ह्य पृ क्षा प पि पु ष्य चं दं से दे व शं भो ह परि ज्ञा वा होः ॥ स ह म पु ष्येः प त ति ज्ञा भा त मा  
 र्भ्य ता प स त्चि त्र मे त त ॥ ७२ ॥ कृ पा ति सा नी र ज नी र धारा स पु ष्य पु जे ति पि चि त्र मे त त ॥ म न्य स ह  
 रा स्य प दानु पा गा त्सा पु ज्य मे वे ति शि ये न नि त्प ॥ ७३ ॥ तत्रै व पु नः ॥ हो का हो क म ही ध रे ण ध र णी वा  
 क्षा पि ता कां च न प्रा का रे ण स मं त तः परि च तं ह मा दि भं गै रि व ॥ प्रा ता दे र्गि रि ग ह रे रि व पु तं है मै नि कुं जे  
 स्य हं पा ता हो रि व निर्मि ते स्त ह ग ह श्ये तो न क स्या उ ह रे त ॥ ७४ ॥ त द्र क्ष कः को पि म हा न म न स्वी म हा  
 य रा स्वी भ ग वा न् स ह द्रः नि र्जि ह्य पा सा र्ध म न र्ध्व शी हो ग णो म हा त्मा उ ति त थै व त त्र ॥ ७५ ॥ ए त त्प  
 तां व धि पि रं चि त्ती इ दे व मु र्ग्या म रा वा ति मु नी र व र स ज्ज ति श्य ॥ अ ने न को पि न प वा न पि त त्र वा  
 ति ना स्ते ग ति नि प त मे त द्यो ह स त्प ॥ ७६ ॥ ॥ इ ति श्री वि वे दि स र्वे श्व र सु क वि वि र चित भं गार  
 शा हा पा म ष्ठी भं गिः स मा ति म ग म त ॥ त स्य प्रा का र स्या भ्यं त रे ॥ वे दै र्ना कृ ति ते न वा परि चिते तं ज्ञा  
 ग मे स्त र्जु तो उ हा जे ता र्जि क सां र्ग्य रा स्य नि र तै र्यै शो षि कै र्ये गि मिः ॥ त त्प ज्ञा न र तैः प तं ज हि म ता पि षे  
 स्त प्पा ज्ञा ति वा च द ना च र का दि मि श्य मु नि मिः सं वी क्षि ते त त्प तः ॥ १ ॥ न पि क्षु ना च ज्ञा पि क्षु ना पि



सनाधिः सुचासिं धुतं भासिनो मंजुला नर्तकस्यां वसिं दूर दूर प्रमोदासि पञ्चि जस र्पन्मता हस्त  
 शोभां पचते तुङ्गं धा पुगं नूपुराणी स्वनाकर्णना कृष्णमा हरव रत्नान्तमं द्विद्वयं मो जमेतन्म  
 मस्यां तभ्यं गत्यन्तोष कारिणि पं मेद पातु प्रियं मे करो तुममो दं वरं वेद विधां वि मुक्तिं सु मुक्तिं सु  
 भक्तिं कवित्वं सुपत्त ह त्वे मंतः स्थिरत्वं महत्वं द पा तुल्यं मे वद्विजे बुजरा प्रत्य मे यं त्य मे नासि माता पि  
 ता त्वं च सर्वं मे मे वार्य पासित्व मे नासि रिपि पये मो द कारि रिप ये तार तार रि एष ये दे पिता रि एष  
 पे प्राप्त मे तं जनं पाहि पाहि ज्ञे पा हं कते श्री स्व रूपे स्व धा रूपिणि श्री स्व रूपे सु रूपे वष  
 द्वा र रूपे मे हरा नि कूपे गुणा नां म हो न स्व रूपे महा बुद्धि रूपे महानीति गेह न हारांति ज्ञे सा  
 दा ह ये चित्पदे देहि यो घो दं दे पितु त्वं न मः ॥ ॥ सुर न र व र दे स्त वे न सु ता ने न रां भु जि ये  
 सु स्थि रां वर्ध पत्वं प्रियं भक्ति पुक्त स्प नित्यं ॥ त्वं दारा व को दे पि चित्सा ध को ना व सं भा वितः  
 कोटि ना धा पतः सा च सु सार म्पा व ह्यं प्र कृ ष्ट प्रियः सुंदरी एां प्रियः जेन वारां निधिः वेद विधा व धि स्तोति  
 तो को हितं यो हि फ जां त नो ति ध्रुवं ते ध्रुवं तं तु पं ति ध्रु वा धाः प्रियं त स्प दे वाः प्र कु र्पं ति नित्यं ॥ ॥

२५

महाराजराजेश्वरी राजमान्येश्वरी राजपूज्येश्वरी त्वं यथा राजसे राजराजेश्वरी राजमान्येश्वरी  
 राजपूज्येश्वरी राजगणेश्वरी राजचन्यामरो राजते ते तथा भक्ति पुक्तः सुरभी सेवक सेतन दुःखी  
 कदाचित् च नी किं क र से न रं कः कदा चित् प्र सन्नो जन सेतन सन्नः कदा चित् सु भो गी न र सेतन  
 रोगी कदा चित् न रि षेा जन सेतन दुःखः कदा चित् न रि षेा न र सेतन हृद्यः कदा चित् सु प्र  
 धा जन सेतन हृद्यः कदा चित् न र्क्ष मी ते तु भ त्तो प नी सं प नी योग पुक्तो जन सेतन र ह्य  
 सु पां गी स पा ते तु पा सो न तु र्ची पि पो गी नि रा राः कदा चित् पदे कः कदा चित् त दा सो पि मुक्तः  
 स तु व्रज रूप सुरीयः स एव प्रभुः सार भूतः श्रुती नां स एव त्व दी प स्त्रि हो की सु वं धो वृ निं धो हि  
 व दार का स्त स्प भक्ताः कि न न्य द्वि हो की त हो चो ठ न ग ए या ति ध न्यः शरण्य स्व दी पो महा भक्ति मे  
 तो हि सं तो हितं सत्य मे त द्दं ति प्र मा णं भ वा नी भ वा र्च नुर क्ताः सु भ क्तान सी पं ति हो जे न सी पं ति ते  
 कु हा नि भि पो ना व सी पं ति ते षां व हं नै व सी प त्व मे या स्तु ते वे द पि धा व तं साः प्र गं सं ति सं तः सु व  
 ति ध्रुवं ते किं व तः क्षि तौ नी ति म त स्तु स तः स दा जा प ते ते बु पि धा च ते षां कु हं सं ता ते व र्ध ते सो र



दाराण दाराभवंति क्षितौ कीर्तिधारा प्रसारा स्फुरंति स्तुतिर्नैव तेऽन्यस्य कुर्वति भक्ता भवन्त्या भवस्य स्तु  
 तिर्षैः कृता त्वत्कृपेयात्र हेतुस्तत्रार्थैव सत्कारणं तावकी नानुति सत्रवीजं त्वमेवासि मातर्गुणं हं कृता  
 स्वयं भक्ता वलं वा त्रिहो कीर्तता वा त्रिहो कोपकारे प्रपुक्ता सि मुक्ता सि मुक्ता सि मुक्ति प्रदा मुक्त संसे  
 पिता मंजु मुक्ता कृता पा सुमुक्ति चिरात्परा ह्या पुरीष प्रभाभा समा ना समा ना गुणा ना निधा  
 मंजु धाना प्रभाभा च कारी त्वमेवास्य वंती त्रिहो कीर्त हस्या प्यवंती नयंती क्षपंता नवा न स क्षपंती च  
 दुष्का नृदा दारिका सि प्रभाभा सितांगी रुशंगी च सांगी त विधा प्रसंगी रूतानेक भक्ता सि कांची स्वस्व  
 च कांची दुधाना प्यपो व्यासि पो व्या न संति त्रिहो कीर्त ह्ये नरो वा वरो वा सवो वा प्यहीनो वरं वा भवं भक्ति  
 पुक्तेऽर्पयंती सदा मायमा मासि मायां महेश स्वभाये मधो स्तं पुरीका पि पि शंति माता जणा मंजु कुर्व  
 ति ये ते भुमा नंददा सि जिया देवता नां च पद्मा ह्या पद्मनाभस्य सेवां करोति ध्रुवं पद्मनिध्या पद्मः संनिधिं  
 ते प्रया ता पिरं चि प्रिया स्तुर्प कांता पि कांता त्वं दधी सदा सेवते ते यमाने सुराणां महेश जिये जेम वारां  
 निधे देवि मातः प्रसन्ना भवत्यां प्रपन्ना स्मिनि त्वं सदा देहि को धो दप देवि तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमः

३०

जनेनां जितेरां करे रंजिते श्रुत्पुंता चिते से व्यमाने श्रुतिव्या जतः किं श्रुतिव्या भूये हो चने दुःख सं  
 मोचने त्वं जरीं सरो जग निमी नं न नो जस्य वाणां श्रि पा चाप हन हि पा संगतं कुर्वतो नासिका मो  
 तिकं पंत वा स श्रि पा रंजित की रतुं सुवि नं चतां नूत सद्दीप्ति का शुद्ध रगा यही मिष पी पूष धा  
 रे वमा चा जपतां शिशो रा नने वा हतु ह्या मरा नू मा ग्य मा जो न ये त्वत्प्रसा दी कता चेदि मां देव  
 देवः पिता संस्तुतेः स्वजसा दं विदध्या न्मुखेऽस्पा र्पिते पं भवत्पा सरो जे का एका ह कूटस्य ते स्तोत्र  
 शांते प दंतु स्वयं स्वी करो त्वे व स स्व द्मुक्ता कृ हापो ज्य हा कंठ प ह्यो विरा ह्या हते व स्म ता ता  
 प हंती र प हा नां नि पं श्री च मं श्री प तं चादि मंत्र जिये मंत्र सिद्धि जिये सिद्ध मंत्राभि चेमंत्रिता पाप हं मे  
 त्र विधा फ हो ह्यो स सिद्धि जिये देवि सिद्धे रपरि स्वर्ग तारो पुरा का पि ता रा हिरै वा कुच दं द मंगारिता  
 मरुता द्वा पात गता फिर या गा र्ज्य पति द्वये सद्गु पा मे त्व गंगा कृ रा स वि भा ति श्रि पा भूषिते  
 मंजु मं दार मा हा न ही चं द हा रा न्नि तं हे मं दार मा चितं ही र हा रां कृत चा रु व क्ष स्य हं नी ह मा रिण म  
 के पूर मरु वा प्रभा भा स्वर स्पर्श संव द्दी र प्रजे ना न्नि तं वा हु पु म त्व दी प रं कं कृ ण का ण स पु त्त  
 म त्पं म मंजु मं ते कर दं ह मे त त सरो ज प्र मं र त्त पुं जो ह त स न्मु द्दि का मां गु ही पं त्त धाः का पि कां ची व  
 कां ची पु ते पं की र त्त ऽति किं वा न वा त्पं त स द ह मा रा प यं ती न ये ती स य चै त सः स स्म ता चा रु ना भिः



तुभ्यं देवि नमो नमो परिदया दृष्टिं कुरु त्वं शिवे दासो हंतव्यो हरा जतनये दीनोस्मि हीनोस्मि च ॥ ॥ त्व  
त्सेवानिरतो रतोस्मि पदयोः स्वत्पूजकः प्रेमतः प्रापः सेव्यतोऽकरोति कुरुणं दीनेपि हीनेपि च ॥ ॥ १ ॥ ॥  
गिरां देव्या गीता सुहृत्तित गिरा देव गुरुणा सुनीता हृत्पञ्जरि रूढि विटं चिस्तुत पदा ॥ ॥ सरे रं वा चातुं न पिहितपि  
हं वा शिवमपीति राहं वा हं वा जगति जगदं वा विजयते ॥ ॥ २ ॥ ॥ पलं पञ्चराणा पते वसुमती कंजं च गुह्यं  
पते स्निग्धः स्वकुरुचिः सुवर्णं रुदही स्तेभ्यश्च जंघा पते ॥ ॥ ३ ॥ ॥ शूलं चापुदरा पते शुचिधरो वक्षो जघना  
पते रेखाभिस्त्रिभिश्च भिभ्यः कंठ उरु मतः कंठा पते संपुतः ॥ ॥ ४ ॥ ॥ देवित्यद्भुतं पीतताऽति कृपिता चा  
पा पते वंधुरा नेत्रां तनितो तनिर्गत शुचिधुनाः रुद्राः शराः ॥ ॥ ५ ॥ ॥ प्यां ता ही चिकुरा पतेऽति तति  
ता भा हं जभा हं रुतं शोभा शास्त्रिनिशं भुक्ता मिनि शुभंतश्चाप्यं प्रापते ॥ ॥ ६ ॥ ॥ अगोचरा त्वं मन  
॥ ॥ ७ ॥ ॥ श्रीमहात्मनोः सुतेन रुपिना सर्वेश्वरेणा च्रवं श्री हा जी पुरासिना विषयगाती रे कुलो ह्य  
सिना ॥ ॥ तद्गान जगदुणा विवेदि कु हजे ना त्पादरा हीरभा पुत्रेणा जगत्समाप्तिममिता भृंगं राक्षसा



शुभा ॥ ॥ ६ ॥ ॥ कृतात्मनुध्याभंगारशाहासर्वेश्वरेण हि ॥ ॥ विद्वान्तःशेषकाभस्याः कृपया प्र  
 तनंतु ॥ ॥ ७ ॥ ॥ अतुपंचाष्टभूतुक्तैरेवमुद्यमतिपत्तिथौ ॥ ॥ द्विहोत्रस्य कृतिं सर्वेश्वरः सत्कृतिहेत  
 वे ॥ ॥ १८५६ ॥ ॥ ॥ इति श्रीन्यायसिद्धांतवेदांतलंशाक्षि श्रीमद्विंशमणि गुरु प्रसादपरि  
 ब्राज प्रतिभा जेतिष्ठितेन न्यायतर्कसाहित्य चारंगमेन हृदयंगम नीतिविद्याविशारदशास्त्रचंद्रो  
 पमपशः पारदस्य श्रीहाहामणे सानुजन्मना उकृतिना सर्वेश्वरेण विरचिता भंगारशाहा ॥  
 समाप्तिमगमत् ॥ ॥ शुभं भूपाहोत्रपादरूपैः सर्वैः प्रकृत्युभय ॥ ॥ शुभमस्तु शिवाय सादात्  
 नत्यात्यधरणा रविंदपुगहं चाता विधत्ते कृतिं धत्ते नागपतिः प्राप्स्य भवती मेतां महीमर्षिनि ॥ ॥  
 ॥ ॥ १ ॥ ॥ आस्पृश्यामसरोजसुंदरदशोभत्या सुधांशुनिजं जेपांसं विषदंगरा दुर्बमितं दीपावती  
 जातः ॥ ॥ किं नक्षत्रपरंपरापिमि हनायासं प्रियस्वसितं न जाता प्रमिसा रिक्तेनियतं



मन्यामहे **तत्त्वतः** ॥ २॥ ॥ चनाध्यक्षो यक्षो प्रदजनितपक्षो दिविषतां विषक्षो पद्रक्षो भवविभयमक्षो भयमभज  
त ॥ ॥ तदुत्कर्षे कर्षे कृतकनक्रवर्षे तव रुपा जगज्जेतुर्नेतुः पुरमथ न हेतुर्विजयते ॥ ३॥ ॥ तुषारगिरिकन्यका  
पतिरिति त्वमाहोचितो गृहेन जनको जनैः सकृत्तल्लोकनाथः जगो ॥ ॥ जगो धूम्रलगे चरः स्तुति चये  
न चैतन्मतेत्यनुद्विष्टा पितवस्तु नित्यपि मुधैव मुदं क्रितं ॥ ४॥ ॥ गुह्यी सुरधुनी चरः किमु चरात्मजा बह्वभो  
मुनी तमनोचितः किमु तानिर्गुणो नामपः ॥ ॥ इति त्वपि निरंजने सकृत्तल्लोकसंरंजने सुरारिगणभंजने स्तुतिग  
णोपितं देहनाक ॥ ५॥ ॥ चेपमाशैतस्तुतस्तदगमनुता पेपाम्पारांतिनीशोपाज्ञानवता सता  
च सरणिर्देवा सुदृष्टिः शुभे ॥ ॥ हेपासंस्थिति सारसंपद रिप ह्यज्ञेयामनः कल्पनाशेयोऽतीगुरुस्तानिधौ  
स्तुतिनसागेपागुणाः शीपतेः ॥ ६॥ ॥ दपावेत्ता सिलभगवति न हेत्तास्तु चित्तानि फलं कायेत्ता दु  
रितमथ येत्ता चरसुते ॥ ॥ रुपांरुत्तो कामं मपुपरिजहीपं जामपं मदीपं पारिभ्रं किमु जननिरुं भापि  
दृष्टं ॥ ७॥ ॥ चनेन परांस्तनपान्पि हापस्तेहं पिचते जननी तु तस्मिन् ॥ ॥ पीनोऽधनोपः सुतप  
षपं यामातर्भवत्यपि परीत एव ॥ ८॥ ॥ तुहिन शिखरिभंगे भाति पः स्याणुरेकोपदमस्तननुत्तगनाच  
स्तरी कापणी ॥ ॥ निजमननपुते भ्योऽः स्वमन्त्रे हि जेभ्यो वितरति फलमंभो सारूपं तमीडे ॥ ९॥ ॥



॥ श्रीरामो जयति ॥

॥ षड्विंशतिस्तस्य पुनः  
षोडशमेव च ॥ ईषते केन म  
से देवतं विदयमेव च ॥ १ ॥  
मीढुष्टमेति च चारिएत द्वि  
शानरुद्रियम् ॥ १ ॥

109

श्री गंगारत्न



॥ श्रीरामो जयति ॥

॥ षड्विंशीतस्तुतः पुनः  
षोडशमेव च ॥ ईषते देनम  
स्ते देनतं विदयमेव च ॥ १॥  
मीढुष्टमेति चत्वारि एत द्वि  
शतं रुद्रियम् ॥ १॥

109

श्री गंगारक्षिता